डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 20.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 30)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"बनइ न बरनत नगर निकाई।...
....सोभा किमि कहि जाति।। "

प्रस्तुत पद्यावतरण हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित रामचरितमानस के बालकाण्ड से उद्धृत है। इसके रचयिता हिन्दी साहित्येतिहास में भक्तिकाल की सगुण धारा की रामभक्ति-शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि गोस्वामी तुलसीदास हैं।

प्रस्तुत प्रसंग श्रीराम-विवाह की पृष्ठभूमि है। रामचरितमानस के बालकाण्ड में दोहा संख्या 211 तक में अहल्या के उद्धार की कथा वर्णित हुई है। उसके बाद श्रीराम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के साथ जनकपुर की ओर यात्रा करते हैं, जिसका काव्यात्मक वर्णन दोहा संख्या 212 के अंतर्गत लिखित चौपाइयों से आरंभ होता है। प्रस्तुत चौपाइयाँ दोहा संख्या 213 के अंतर्गत हैं।

प्रस्तुत प्रसंग में जनकपुरी की शोभा का ही वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि नगर की सुंदरता का वर्णन करते नहीं बनता है। मन जहाँ जाता है वहीं लुभा जाता है अर्थात् रम जाता है। सुंदर बाजार हैं, मणियों से बने हुए विचित्र छज्जे हैं, ऐसा लगता है जैसे ब्रह्मा ने उन्हें अपने हाथों से बनाया हो। कुबेर के समान श्रेष्ठ धनी व्यापारी सब प्रकार की अनेक वस्तुएँ लेकर दुकानों में बैठे हैं। सुंदर चौराहे और सुहावनी गलियाँ हमेशा सुगंध से सिंचित रहती हैं। सबके घर मंगलमय हैं और उन पर चित्र कढ़े हुए हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्हें कामदेव रूपी चित्रकार ने चित्रित किया हो। नगर के सभी स्त्री-पुरुष सुंदर, पवित्र, साधु स्वभाव वाले, धर्मात्मा, ज्ञानी और गुणवान हैं। जहाँ जनक जी का अत्यंत अनुपम निवास स्थान है वहाँ के विलास

अर्थात् ऐश्वर्य को देखकर देवता भी थकित अर्थात् स्तंभित हो जाते हैं, तो फिर मनुष्यों की क्या बात! राजमहल के परकोटे को देखकर हृदय चकित हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसने समस्त लोकों की शोभा रोक कर रखी है। उज्ज्वल महलों में अनेक प्रकार के सुंदर ढंग से बने हुए मणिजटित सोने की जरी के परदे लगे हैं। सीताजी के रहने के सुंदर महल की शोभा का वर्णन किया ही कैसे जा सकता है, अर्थात् जब नगर इतना सुंदर है तो सीता जी के महल की शोभा का वर्णन करना संभव प्रतीत नहीं होता है।

इस प्रकार इन चौपाइयों एवं दोहे में विदेशहराज जनक की नगरी के सौंदर्य का ही काव्यात्मक वर्णन हुआ है।